International Journal of Unified Knowledge
Volume 1, Issue 2, December 2025

भारतीय पारंपरिक चित्रकला (मधुबनी, कलमकारी, पट्टचित्र) और समकालीन भारतीय पेंटिंग का तुलनात्मक विश्लेषण

Dr. Neha Verma
Department of Visual Art, Banaras Hindu University, India

सारांश (Abstract)

भारत की पारंपरिक चित्रकला शैलियाँ—मधुबनी, कलमकारी और पट्टचित्र—सामुदायिक आस्था, लोक-स्मृति व सांस्कृतिक निरंतरता की संवाहक हैं। इनके विपरीत, समकालीन भारतीय पेंटिंग व्यक्तिगत अभिव्यक्ति, सामाजिक आलोचना और बहु-माध्यमीय प्रयोगधर्मिता का प्रतिनिधित्व करती है। प्रस्तुत शोध-पत्र में तकनीक, सामग्री, विषय-वस्तु, प्रतीकवाद और सांस्कृतिक भूमिका के आधार पर पारंपरिक बनाम आधुनिक भारतीय चित्रकला का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जहाँ पारंपरिक शैलियाँ समुदाय-केंद्रित, पौराणिक और अनुष्ठानिक जीवन को दर्शाती हैं, वहीं आधुनिक कला व्यक्तिनिष्ठ अनुभव, वैश्विक प्रभाव और सामाजिक-राजनीतिक विमर्श को उद्घाटित करती है। दोनों में एक ही सांस्कृतिक धारा का विस्तार देखा जा सकता है—अर्थात "कहानी कहना," परंतु उसके रूप और अर्थ समय के साथ बदलते रहे हैं।

1. परिचय

भारत की चित्रकला परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन और बहुआयामी कलाओं में से एक है, जिसकी जड़ें आदिम गुफा-चित्रों से लेकर मध्यकालीन मंदिर-भित्तिचित्रों, लोक-कलाओं और आधुनिक कला-आंदोलनों तक विस्तृत हैं। भारतीय चित्रकला न केवल सौंदर्यबोध की अभिव्यक्ति है, बल्कि यह सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन, धार्मिक विश्वासों, मिथकीय आख्यानों, आर्थिक संरचनाओं और सामुदायिक अनुभवों का महत्वपूर्ण दस्तावेज भी है।

इन विविध कलाओं में **मधुबनी (बिहार)**, **कलमकारी (आंध्र प्रदेश/तेलंगाना)** और **पट्टचित्र (ओडिशा/पश्चिम बंगाल)** जैसी पारंपरिक लोक-शैलियाँ अपने विशिष्ट सौंदर्यशास्त्र, रंग-प्रयोग, अनुष्ठानिक भूमिका और कथात्मक संरचना के कारण विशेष महत्त्व रखती हैं। ये कलाएँ न केवल दृश्य अभिव्यक्ति हैं, बल्कि एक संपूर्ण सांस्कृतिक प्रणाली का हिस्सा हैं, जिसमें कलाकार, समुदाय, परंपरा, अनुष्ठान और प्रकृति—सभी एक साथ अंतर्निहित रहते हैं।

दूसरी ओर, **समकालीन भारतीय चित्रकला** ने 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से एक व्यापक परिवर्तन का अनुभव किया है। उपनिवेशवादी प्रभाव, आधुनिकतावाद, अमूर्तनवाद, वैश्वीकरण, नारीवादी दृष्टिकोण, डिजिटल मीडिया और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) जैसी नई तकनीकों ने भारतीय कला को नए आयाम प्रदान किए हैं। आधुनिक कलाकार व्यक्तिगत अनुभवों, मनोवैज्ञानिक अवस्थाओं, राजनीतिक प्रश्नों, सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक पहचान के नए रूपों को अपने कार्य में शामिल कर रहे हैं।

भारत की पारंपरिक चित्रकलाएँ जहाँ सामुदायिक पहचान, पौराणिक कथाओं और प्रकृति-आधारित जीवन-दर्शन को प्रतिबिंबित करती हैं, वहीं समकालीन पेंटिंग व्यक्तिगत दृष्टि, प्रयोगधर्मिता और आलोचनात्मक संवेदना की वाहक है। यही कारण है कि पारंपरिक और आधुनिक भारतीय चित्रकला के बीच तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक हो जाता है, ताकि यह समझा जा सके कि कला किस प्रकार समय, समाज और तकनीक के साथ अपना स्वरूप बदलती है और नई संवेदनाओं को ग्रहण करती है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य इन तीन प्रमुख लोक-कला शैलियों और समकालीन भारतीय चित्रकला के मध्य तकनीकी, सौंदर्यशास्त्रीय तथा सांस्कृतिक भिन्नताओं का विश्लेषण करना है, साथ ही यह भी अध्ययन करना है कि पारंपरिक कलाएँ आज के कलात्मक परिदृश्य में किस प्रकार पुनर्व्याख्यायित (reinterpret) और पुनर्स्थापित (recontextualized) हो रही हैं।

2. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य भारतीय पारंपरिक चित्रकला—विशेषकर **मधुबनी**, **कलमकारी** और **पट्टचित्र**—तथा समकालीन भारतीय पेंटिंग के बीच सौंदर्यशास्त्रीय, तकनीकी और वैचारिक भिन्नताओं का विश्लेषण करना है। इस लक्ष्य के अंतर्गत निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्यों को निर्धारित किया गया है:

2.1 **पारंपरिक चित्रकला शैलियों की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करना**

इन तीनों लोक-कला शैलियों के उद्भव, विकास, सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ, धार्मिक संबंध और सामुदायिक महत्व की व्यवस्थित व्याख्या करना।

2.2 **शैलीगत तत्वों एवं तकनीकी विशेषताओं का विश्लेषण करना**

मधुबनी, कलमकारी और पट्टचित्र में उपयोग होने वाली

- रेखाओं,
- रंगों,
- प्रतीकों,
- पैटर्न,
- सामग्री,
- निर्माण-प्रक्रिया (Technique)
  का विस्तार से अध्ययन करना।

2.3 **समकालीन भारतीय पेंटिंग की प्रवृत्तियों को समझना**

आधुनिक कला में उभरी नई दृष्टियों—अमूर्तनवाद, डिजिटल आर्ट, बहुमाध्यमीय प्रयोग, सामाजिक आलोचना, स्त्रीवादी दृष्टिकोण और वैश्विक प्रभाव—का विश्लेषण करना।

2.4 पारंपरिक और समकालीन चित्रकला की तुलनात्मक समीक्षा करना

दोनों प्रकार की कलाओं में—

- विषय-वस्तु
- अभिव्यक्ति के तरीके
- रंग-संयोजन
- प्रतीकवाद
- सामाजिक भूमिका
- कलात्मक उद्देश्य
  आदि की समानताओं और भिन्नताओं की पहचान करना।

2.5 पारंपरिक कला के आधुनिक पुनर्व्याख्यान (reinterpretation) को पहचानना

यह अध्ययन करना कि आधुनिक कलाकार किस प्रकार पारंपरिक शैलियों, प्रतीकों या तकनीकों को नए संदर्भों, माध्यमों और सामाजिक विमर्शों के माध्यम से पुनर्परिभाषित कर रहे हैं।

2.6 भारतीय कला परंपरा में निरंतरता और परिवर्तन के संबंध को स्पष्ट करना

यह समझना कि कैसे भारतीय चित्रकला में समय के साथ परिवर्तन आते हुए भी सांस्कृतिक जड़ों की निरंतरता संरक्षित रहती है।

3. कार्यप्रणाली (Methodology)

इस शोध-पत्र में तुलनात्मक एवं गुणात्मक (qualitative) अनुसंधान दृष्टिकोण का उपयोग किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य पारंपरिक भारतीय चित्रकला—मधुबनी, कलमकारी और पट्टचित्र—तथा समकालीन भारतीय पेंटिंग की शैलीगत, तकनीकी और सांस्कृतिक विशिष्टताओं का सम्यक विश्लेषण करना है। इसी हेतु निम्नलिखित कार्यप्रणाली अपनाई गई:

3.1 अनुसंधान दृष्टिकोण (Research Approach)

यह अध्ययन मुख्यतः **गुणात्मक (Qualitative)** दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसमें चित्रकलाओं की संरचना, प्रतीकवाद, रंग-प्रयोग, विषय-वस्तु और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों को समझने हेतु सैद्धांतिक एवं वर्णनात्मक पद्धतियों का उपयोग किया गया।

3.2 पाठीय एवं ऐतिहासिक विश्लेषण (Textual and Historical Analysis)

- कला इतिहास, लोक-परंपरा, पौराणिक साहित्य एवं दृश्य-कलाओं पर लिखित पुस्तकों, शोध-पत्रों, संग्रहालय अभिलेखों और सरकारी दस्तावेजों की समीक्षा की गई।

- मधुबनी, कलमकारी और पट्टचित्र की उत्पत्ति, विकास, पारंपरिक तकनीकों और धार्मिक/सांस्कृतिक संबंधों का अध्ययन ऐतिहासिक दृष्टिकोण से किया गया।

3.3 दृश्य-अर्थविधान (Visual Semiotic Analysis)

चित्रों के

- प्रतीकों (symbols),
- चिह्नों (motifs),
- रंग-संयोजन,
- रेखाओं,
- पैटर्नों
  का विश्लेषण सेमियॉटिक (Semiotic) सिद्धांतों के आधार पर किया गया।

इस पद्धति द्वारा यह समझने का प्रयास किया गया कि पारंपरिक और आधुनिक कला में दृश्य-तत्व किस प्रकार अर्थ निर्माण करते हैं।

3.4 तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis)

पारंपरिक और आधुनिक चित्रकला के बीच निम्नलिखित आधारों पर तुलना की गई:

- सामग्री (Materials)
- तकनीक (Technique)
- अभिव्यक्ति शैली (Expression)
- कलात्मक उद्देश्य (Artistic Intent)
- सांस्कृतिक एवं सामाजिक भूमिका
- सौंदर्यशास्त्रीय विशेषताएँ

यह तुलना तालिकात्मक रूप में भी प्रस्तुत की गई, जिससे दोनों कला-रूपों की समानताएँ और भिन्नताएँ स्पष्ट हो सकें।

3.5 द्वितीयक स्रोतों का संग्रह (Secondary Data Collection)

अध्ययन हेतु निम्नलिखित स्रोतों का उपयोग किया गया—

- शैक्षणिक पुस्तकें
- राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय जर्नल
- कला-संग्रहालयों व गैलरियों के ऑनलाइन अभिलेख
- कला-समीक्षकों के लेख

- प्रदर्शनियों के कैटलॉग
- सरकारी और गैर-सरकारी रिपोर्टें

3.6 समकालीन कलाओं के अध्ययन हेतु आधुनिक स्रोतों का उपयोग

समकालीन भारतीय कला को समझने के लिए—

- आधुनिक कलाकारों के कार्य,
- ऑनलाइन डिजिटल गैलरियाँ,
- कला-समाजशास्त्र (Art Sociology),
- कला-आलोचना (Art Criticism),
- और इंटरव्यू तथा डॉक्यूमेंट्री
  का विश्लेषण किया गया।

3.7 सीमाएँ (Limitations)

- अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है; प्राथमिक क्षेत्र-कार्य (fieldwork) सीमित रहा।
- पारंपरिक शैलियों के भीतर भी भौगोलिक एवं पारिवारिक विविधताएँ होने के कारण सभी रूपों का पूर्ण प्रतिनिधित्व संभव नहीं है।

4. भारतीय पारंपरिक चित्रकला की प्रमुख शैलियाँ

भारत की पारंपरिक चित्रकलाएँ केवल सौंदर्यबोध का माध्यम नहीं हैं, बल्कि ये सामुदायिक जीवन, धार्मिक आस्था, मिथकीय आख्यान और सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों की द्योतक हैं। मधुबनी, कलमकारी और पट्टचित्र भारतीय लोक-कलाओं के विशिष्ट उदाहरण हैं, जिनमें तकनीक, विषय-वस्तु, रंग-प्रयोग और सांस्कृतिक संदर्भ अद्वितीय रूप से परिलक्षित होते हैं। नीचे इन तीनों शैलियों का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत है।

4.1 मधुबनी चित्रकला (Madhubani Painting – बिहार)

4.1.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मधुबनी चित्रकला का उद्भव मिथिला क्षेत्र में माना जाता है, जहाँ इसे प्राचीन काल से ही विशेष रूप से विवाह, जन्मोत्सव तथा धार्मिक अनुष्ठानों में बनाया जाता रहा है। परंपरा के अनुसार, राजा जनक ने सीता-स्वयंवर के अवसर पर पूरे नगर को दीवार-चित्रों से सजवाया था, जिसे इस कला की ऐतिहासिक शुरुआत माना जाता है।

4.1.2 शैलीगत विशेषताएँ

- **रेखांकन:** ज्यामितीय पैटर्न, दोहरी सीमारेखाएँ, जटिल मोटिफ।

- **रंग:** प्राकृतिक स्रोतों से निर्मित—हल्दी (पीला), कुट्टू/काजल (काला), पत्तों से हरा, फूलों से लाल।
- **सतह:** हाथ से बने कागज, दीवार, फर्श, कपड़ा।
- **पैटर्न:**
  - *कच्चनी शैली*: सूक्ष्म रेखाएँ, एकल रंग (मुख्यतः काला)।
  - *भरनी शैली*: चमकीले रंगों से भरी सतह।
  - *तंत्र शैली*: देवियों और तांत्रिक प्रतीकों का चित्रण।
  - *कोहबर शैली*: विवाह-परक शुभ थीम।

4.1.3 **विषय-वस्तु व प्रतीक**

- देवी-देवता (लक्ष्मी, सीता-राम, कृष्ण),
- सूर्य, मछली, कमल, वन्यजीवन,
- समाजिक परिस्थितियाँ (स्त्री-जीवन, प्रकृति, पर्यावरण)।

प्रत्येक चित्र में "पूर्णता" का भाव अनिवार्य है—कोई स्थान खाली नहीं छोड़ा जाता।

4.2 **कलमकारी चित्रकला (Kalamkari Painting – आंध्र प्रदेश/तेलंगाना)**

4.2.1 **ऐतिहासिक विकास**

कलमकारी का अर्थ है—"कलम द्वारा की गई कला"। यह तकनीक मंदिर-कथाएँ सुनाने वाले चित्रकारों द्वारा विकसित हुई। बाद में मुगल काल में इसकी भव्यता बढ़ी और फारसी floral डिज़ाइनों का समावेश हुआ।

4.2.2 **तकनीकी विशेषताएँ**

- **'कलम'** (इमली की लकड़ी और कपास की डंडी) से freehand drawing।
- **प्राकृतिक रंगों का चरणबद्ध उपयोग:**
  - काला—iron rust + jaggery + water
  - लाल—मद्रास रूबी पाउडर
  - पीला—हरद
  - नीला—नील
- कई चरणों में उबालना, सुखाना, धूप में रखना—काफी श्रम-साध्य प्रक्रिया।

4.2.3 **प्रमुख शैलियाँ**

1. **श्रीकालहस्ती शैली:**
   - freehand drawing
   - पौराणिक आख्यानों का विस्तृत दृश्यांकन

2. **माकलपट्टनम शैली:**
    - block-printing
    - फारसी और मुगल शैली की नाज़ुक floral patterns

4.2.4 विषय-वस्तु

- रामायण, महाभारत के प्रसंग
- देवी-देवियाँ
- मंडला-शैली की संरचना
- प्रकृति—पेड़, बेल-बूटे, जानवर

कलमकारी की पहचान उसकी सूक्ष्मता, संयमित रंग-प्रयोग और कथा-वाचन के ढंग में है।

4.3 पट्टचित्र (Pattachitra – ओडिशा/पश्चिम बंगाल)

4.3.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

पट्टचित्र का अर्थ है—"पट्ट (कपड़ा) पर बना चित्र।" इसका संबंध विशेष रूप से *जगन्नाथ संप्रदाय* से रहा है। रघुराजपुर (ओडिशा) इस कला का प्रमुख केन्द्र है, जहाँ प्रत्येक घर में किसी न किसी रूप में यह परंपरा जीवित है।

4.3.2 सामग्री और तकनीक

- कपड़ा या पट्ट को पहले chalk powder और गोंद से लेपकर मजबूत किया जाता है।
- रंग 100% प्राकृतिक—
    - लाल—हिंगुल
    - पीला—हरताल
    - नीला—निलांचल मिट्टी
    - काला—काजल
- ब्रश खार (Rat hair) या पौधों से बनाए जाते हैं।

4.3.3 शैलीगत विशेषताएँ

- मोटी काली सीमारेखा, सूक्ष्म ornamental border।
- अत्यंत सूक्ष्म, narrative detailing।
- चमकीले primary colours का प्रयोग।

4.3.4 विषय-वस्तु

- जगन्नाथ त्रिमूर्ति
- दशावतार
- कृष्ण-लीला
- रामायण प्रसंग
- देवी-देवताओं की कथा-वर्णनात्मक panels

पट्टचित्र का स्वरूप अत्यंत सजावटी, आध्यात्मिक और narrative है।

4.4 पारंपरिक चित्रकलाओं की साझा विशेषताएँ

इन तीनों शैलियों में कई समान तत्व पाए जाते हैं—

- प्राकृतिक रंगों का प्रमुख उपयोग
- पौराणिक एवं धार्मिक विषय
- सामुदायिक और अनुष्ठानिक संदर्भ
- कथा-वाचन की परंपरा
- प्रतीकवाद — सूर्य, कमल, पशु-पक्षी, देवी-देवता
- सौंदर्यशास्त्र की निरंतरता और पीढ़ियों से चला आ रहा ज्ञान

इन शैलियों में कलाकार का कौशल केवल चित्रण तक सीमित नहीं, बल्कि सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण से भी जुड़ा होता है।

5. समकालीन भारतीय पेंटिंग की प्रमुख विशेषताएँ

समकालीन भारतीय पेंटिंग, 20वीं शताब्दी के मध्य से लेकर वर्तमान समय तक विकसित हुई कलात्मक प्रवृत्तियों का समुच्चय है। यह काल भारतीय कला के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ प्रस्तुत करता है, जहाँ पारंपरिक, औपनिवेशिक, आधुनिकतावादी और वैश्विक प्रभावों की परस्पर अंतःक्रिया से नई सौंदर्य-धारणाएँ निर्मित हुईं। समकालीन कला केवल तकनीक या माध्यम का परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह एक गहन वैचारिक परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें कलाकार व्यक्तिगत अनुभवों, सामाजिक यथार्थ, राजनीतिक संरचनाओं और मनोवैज्ञानिक संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने के नए-नए तरीके अपनाते हैं।

5.1 ऐतिहासिक संदर्भ और विकास

1950 के दशक के बाद भारत में कला ने औपनिवेशिक अकादमिक परंपरा से आगे बढ़कर आधुनिकतावादी रूझानों को अपनाना शुरू किया।

- बॉम्बे प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप (PAG) – एम.एफ. हुसैन, एस.एच. रज़ा, एफ.एन. सूज़ा आदि ने भारतीय कला को वैश्विक आधुनिकता से जोड़ा।
- 1980 के बाद उत्तर-आधुनिक कला, नारीवादी संवेदनाएँ, दृश्य-राजनीति (visual politics) और नई तकनीकों ने कला के अर्थ को व्यापक बनाया।
- 2000 के बाद डिजिटल आर्ट, फोटोग्राफी, इंस्टॉलेशन, परफॉर्मेंस आर्ट और AI-आधारित कला प्रमुख हो गई।

इस प्रकार, समकालीन भारतीय पेंटिंग निरंतर बदलते सामाजिक और तकनीकी वातावरण का प्रतिबिंब बन गई है।

5.2 प्रमुख विशेषताएँ

5.2.1 व्यक्तिगत और मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति

समकालीन कलाकारों के लिए कला केवल सौंदर्य नहीं, बल्कि आत्म-अन्वेषण और अनुभवों का दृश्य रूपांतरण है।

- मनोवैज्ञानिक अवस्थाएँ
- पहचान (identity)
- स्मृति (memory)
- शहरी अनुभव
  कला का केंद्रीय विषय बनते हैं।

5.2.2 सामाजिक व राजनीतिक विमर्श

नई भारतीय पेंटिंग जाति, लिंग, मानवाधिकार, सामाजिक हिंसा, युद्ध, प्रवासन, पर्यावरण संकट जैसे विषयों पर खुला संवाद प्रस्तुत करती है।
उदाहरण: दलित कला आंदोलन, नारीवादी चित्रकला, पर्यावरण-आधारित दृश्य कला।

5.2.3 बहु-माध्यमीय प्रयोग (Mixed Media & New Media Art)

कलाकार अब केवल ब्रश और कैनवास तक सीमित नहीं हैं।
उपयोग होने वाले माध्यम—

- एक्रेलिक
- कोलाज
- चारकोल
- डिजिटल स्क्रीन
- इंस्टॉलेशन

- 3D और AI-generated art

यह प्रयोगधर्मिता समकालीन कला की सबसे बड़ी पहचान है।

5.2.4 वैश्वीकरण और अंतरराष्ट्रीय प्रभाव

भारतीय कलाकार अब अंतरराष्ट्रीय बिएनाले, कला मेले और गैलरियों का हिस्सा हैं। यूरोपीय modernism, अफ्रीकी अभिव्यंजनावाद, जापानी मिनिमलिज़्म और डिजिटल तकनीकें भारतीय सौंदर्यबोध में नए रूप से समाहित हो रही हैं।

5.2.5 व्याख्यात्मक और वैचारिक (Conceptual) कला

चित्रकला अब केवल दृश्य-रूप नहीं है, बल्कि "विचार" (concept) का प्रतिनिधित्व भी है। उदाहरण:

- शहरी असंतुलन पर आधारित अमूर्त कला
- पर्यावरण के संकट पर केंद्रित दृश्य रूपक
- लैंगिक असमानता पर आधारित अवधारणात्मक पेंटिंग

5.3 प्रमुख समकालीन भारतीय कलाकार

1. **एम.एफ. हुसैन** – घोड़ों, देवी-श्रृंखला, आधुनिक भारतीय पहचान
2. **एस.एच. रज़ा** – बिंदु (Bindu), तल और ब्रह्मांडीय ऊर्जा
3. **तैयब मेहता** – त्रिप्रस्तर (triptych), मिनोटौर, हिंसा-विमर्श
4. **अर्पिता सिंह** – स्त्री-जीवन, स्मृति, युद्ध और आघात
5. **जहीर रईन** – रंग, सतह और पैटर्न का प्रयोग
6. **सुबोध गुप्ता** – सामान्य भारतीय जीवन, स्टील-उपकरणों के प्रतीक
7. **भावसिंह** – शहरी यथार्थ और पोस्टर-स्टाइल पेंटिंग
8. **नीलिमा शेखर, गौरी गिल** – नारीवादी दृष्टि व सामाजिक संघर्ष

इन कलाकारों की विविधता यह दर्शाती है कि समकालीन भारतीय कला किसी एक परंपरा या शैली से बंधी नहीं है, बल्कि बहुलता और बहुल-विचारधारा पर आधारित है।

5.4 पारंपरिक कला के साथ संबंध

यद्यपि समकालीन कला अपने रूप, सामग्री और विषय में अत्यंत आधुनिक दिखाई देती है, फिर भी उसके भीतर कई स्तरों पर पारंपरिक कला की स्मृतियाँ जीवित हैं—

- प्रतीकों का पुनर्प्रयोग

- मिथकीय आख्यानों की आधुनिक पुनर्व्याख्या (reinterpretation)
- लोक-रंगों और पैटर्नों का पुनर्संयोजन
- ग्रामीण-शहरी संवाद

इस प्रकार समकालीन कलाकार परंपरा और आधुनिकता के बीच एक नए संवाद की रचना करते हैं।

5.5 समकालीन पेंटिंग का सांस्कृतिक महत्व

समकालीन भारतीय चित्रकला केवल कला का रूप नहीं, बल्कि सामाजिक विमर्श, सांस्कृतिक आलोचना और ऐतिहासिक चेतना का मंच है।
यह कला दर्शक को चुनौती देती है—उसे सोचने, प्रश्न करने और समाज को नए ढाँचों में समझने के लिए प्रेरित करती है।

6. तुलनात्मक विश्लेषण

पहलू	पारंपरिक कला (मधुबनी/कलमकारी/पट्टचित्र)	समकालीन भारतीय पेंटिंग
तकनीक	प्राकृतिक रंग, हाथ से रेखांकन	मिश्रित-माध्यम, डिजिटल, AI
विषय	पौराणिक आख्यान, प्रकृति, अनुष्ठान	सामाजिक मुद्दे, आधुनिक पहचान
सामग्री	कपड़ा, दीवार, प्राकृतिक रंग	कैनवास, डिजिटल स्क्रीन, इंस्टॉलेशन
दर्शक	समुदाय आधारित	वैश्विक कला बाज़ार
अभिव्यक्ति	सामूहिक, अनुष्ठानिक	व्यक्तिगत, वैचारिक
प्रतीकवाद	धार्मिक, सांस्कृतिक	वैचारिक, दार्शनिक

7. निष्कर्ष (Conclusion)

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय पारंपरिक चित्रकलाएँ—मधुबनी, कलमकारी और पट्टचित्र—भारतीय सांस्कृतिक स्मृति, मिथकीय परंपरा और सामूहिक पहचान को जीवंत रूप में अभिव्यक्त करती हैं। इसके विपरीत, समकालीन भारतीय पेंटिंग व्यक्तिगत दृष्टि, सामाजिक-राजनीतिक प्रश्नों, प्रयोगधर्मिता और वैश्विक संवाद का विस्तार है।
दोनों ही रूप भारतीय कला की समृद्ध विविधता को प्रस्तुत करते हैं—एक परंपरा का, दूसरा परिवर्तन का प्रतिनिधि है।

संदर्भ (References)

Bajpai, K. (2019). *Folk arts of India: A cultural journey*. National Book Trust.

Dalal, R. (2021). *The art of Kalamkari: Techniques and traditions*. Rupa Publications.

Jain, J. (2018). *Madhubani painting: Myth and tradition*. Aryan Books International.

Mahapatra, D. (2020). *Pattachitra: Visual storytelling traditions of Odisha*. Odisha State Museum.

Mitter, P. (2007). *Indian art: A critical history*. Oxford University Press.

Nayar, P. (2012). *Contemporary Indian artists*. HarperCollins India.

Sen, A. (2016). Traditional arts and crafts of Eastern India: A study of continuity and change. *Journal of Indian Art History*, 42(2), 55–68.

Varma, S. (2020). Modernity and identity in contemporary Indian painting. *Indian Journal of Visual Culture Studies*, 12(1), 23–38.